Hkkjr d iohl {k= d jkT;k dk vkfFkd l?k

&lj;q jk;

भारत सरकार के योजना आयोग के तत्वावधान में 12वीं पंचवर्षीय योजना (2012–17) के संदर्भ में देश के पूर्वी क्षेत्र के राज्यों का एक दो दिसवसीय सम्मेलन 30–31 मई, 2011 को पटना में हो रहा है। इस सम्मेलन में पूर्वी क्षेत्र के पांच राज्य–बिहार, पश्चिम बंगाल, झारखंड, ओड़िसा और छत्तीसगढ़–भाग ले रहे हैं। ऐसा सम्मेलन पहली बार हो रहा है। योजना आयोग ने इस सम्मेलन के माध्यम से भारत के पूर्वी क्षेत्र को परिभाषित कर दिया है। इन पांच राज्यों में से छत्तीसगढ़ को छोड़कर शेष सभी राज्य 1911 तक एक ही राज्य बंगाल के अधीन थे। 1911 में इससे अलग होकर बिहार और ओड़िसा नामक एक राज्य बना। 1935 में ओड़िसा एक अलग राज्य बन गया। 2000 में बिहार से अलग होकर झारखंड राज्य बना। इसके साथ ही मध्य प्रदेश से अलग होकर छत्तीसगढ़ भी एक राज्य बन गया। यह स्वभाविक है कि मध्य प्रदेश से अलग होने के बाद छत्तीसगढ़ को योजना आयोग ने पूर्वी क्षेत्र के राज्यों के साथ जोड़ दिया है।

भारत के पूर्वी क्षेत्र के ये सभी राज्य योजनात्मक विकास के आरंभिक दिनों से ही उपेक्षा के शिकार हैं। झारखंड, छत्तीसगढ़ और ओड़िसा को मिलाकर भारत के 65 प्रतिशत से अधिक खनिज इस क्षेत्र में है। साथ ही वनों, वन्यजीवों, जैव–विविधता का प्रचुर भंडार प्राकृतिक संपदा के रूप में इस क्षेत्र में विद्यमान है। राज्य विभाजन के बाद गंगा नदी के दोनों तरफ के हिस्सा के भौगोलिक क्षेत्र को जोड़ दिया जाए तो इसका क्षेत्रफल पंजाब और हरियाणा के संयुक्त क्षेत्रफल के बराबर है। पश्चिम बंगाल में भी पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बराबर खेती लायक उपजाऊ जमीन है। यह क्षेत्र कृषि उत्पादन में अग्रणी हो सकता था। परंतु हरित क्रांति के दौर में इस क्षेत्र पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया।

1982 में भारत सरकार के रिजर्व बैंक ने उस समय के सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री श्री एस. आर. सेन की अध्यक्षता में भारत के पूर्वी क्षेत्र के राज्यों में कृषि के पिछड़ापन का अध्ययन करने के लिए एक उच्च स्तरीय समिति गठित किया। इस समिति ने 1984 में अपना प्रतिवेदन दे दिया। प्रतिवेदन में इस क्षेत्र में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों के विकास की प्रबल संभावना को रेखांकित किया गया था। इस प्रतिवेदन में अलग से ट्राइबल एग्रीकल्चर के बारे में विचार किया गया था और इसे सशक्त बनाने का दिशा–निर्देश दिया गया था। कृषि, सिंचाई, सहकारिता, कृषि आधारित उद्योग, बागवानी, रेशम उत्पादन आदि क्षेत्रों में पूंजी निवेश का आकलन किया गया था। परंतु सेन समिति की अनुशंसाओं को क्रियान्वित करने और पूंजी निवेश आधारित विकास योजनायें लागू करने के बारे में भारत सरकार ने कोई पहल नहीं किया। नतीजा है कि कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों के विकास की प्रबल संभावना वाला भारत का पूर्वी क्षेत्र आज भी पिछड़ा हुआ है।

20वीं सदी के आरंभिक दिनों में इस क्षेत्र का आर्थिक विकास हो रहा था। कोलकाता बंदरगाह अत्यंत सक्रिय था और समुद्री व्यापार का सबसे बड़ा माध्यम था। कोलकाता के परिधि में तत्कालीन बंगाल प्रेसिडेंसी के क्षेत्र औद्योगिक विकास, खनिज विकास और कृषि विकास की ओर तेजी से अग्रसर हो रहे थे। 1960 के दशक के उत्तरार्द्ध से इस क्षेत्र में घटित राजनीतिक गतिविधियों के कारण कोलकाता के समीपवर्ती क्षेत्रों में औद्योगिक ह्रास होने लगा। भारत सरकार की खान और खनिज की नीतियों में बदलाव हुआ। इसके बाद बम्बई और दिल्ली के परिधि में

आर्थिक विकास के नये क्षेत्र तेजी से विकसित होने लगे। भारत का पूर्वी क्षेत्र निरंतर पिछड़ते गया। कोलकाता और हल्दिया के बंदरगाहों के सक्रियता कम होती गई। ओड़िसा का पारादीप बंदरगाह भी अपेक्षित प्रगति नहीं कर सका। विशाखापतनम से लेकर कांडला तक भारत के पूर्वी और पश्चिमी समुद्री तटवर्ती क्षेत्रों के बंदरगाहों से भारत का विश्व व्यापार संचालित होने लगा। नतीजा हुआ कि भारत के दक्षिण क्षेत्रों के राज्य, मुम्बई के समीपवर्ती राज्य, दिल्ली के परिधीय क्षेत्रों के राज्य तेजी से विकास करने लगे। भारत सरकार ने पूर्वोत्तर क्षेत्रों के विकास के लिए एक अलग मंत्रालय गठित कर दिया। भारत के पूर्वी क्षेत्र के राज्य विकास और निवेश की सार्थक और सुनियोजित योजनाओं से वंचित रह गए।

भारत का पूर्वी क्षेत्र विश्व व्यापार की मुख्य धारा में शामिल हो, इसके लिए जरुरी है कि पूर्वी क्षेत्र के राज्यों का एक आर्थिक संघ बने जो भारत सरकार पर राजनैतिक दबाव डालकर पूर्वी क्षेत्र की निरंतर उपेक्षा की नीति में भारत सरकार बदलाव करे और इस क्षेत्र के संसाधनों के आधार पर विकास की एक समन्वित और व्यापक योजना लागू कराये। पश्चिम बंगाल में हाल ही में हुए राजनैतिक सत्ता परिवर्तन की इसमें सशक्त भूमिका हो सकती है। बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ और ओड़िसा में कमोबेश समान राजनैतिक मानसिकता की सरकारें हैं। इन राज्यों के मुख्यमंत्रियों का एक सम्मेलन भारत के पूर्वी क्षेत्र के संसाधनों के आधार पर विकास की संभावनाओं को मूर्त्त रूप देने और इस क्षेत्र का दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों के साथ व्यापार बढ़ाकर विश्व व्यापार के साथ इसे जोड़ने के एजेंडा के आधार पर आयोजित किया जाना एक सार्थक कदम हो सकता है। बंगाल की खाड़ी की दूसरी तरफ के देशों ने इस बीच काफी प्रगति किया है और इसमें से कुछ देश एशियन टाइगर कहलाने लगे हैं। कोलकाता, हल्दिया और पारादीप बंदरगाहों को सक्रिय बनाकर इनके साथ भारत के विश्व व्यापार का लाभ पूर्वी क्षेत्र के राज्य उठा सकते हैं। अन्यथा इसका लाभ देश के पूर्वी और पश्चिमी समुद्री तटवर्ती इलाकों के राज्य ही उठाते रहेंगे।

भारत का पूर्वी क्षेत्र नेपाल और भूटान की सीमा से जुड़ा हुआ है। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के लिए भी यह क्षेत्र शेष राष्ट्र के साथ सम्पर्क का माध्यम है। भारत और भारत के पड़ोसी देशों के साथ विश्व व्यापार का सम्पर्क क्षेत्र के रूप में पूर्वी क्षेत्र का स्वाभाविक उपयोग संभव है। इस तरह एक बड़ा भू–भाग पूर्वी क्षेत्र में औद्योगिक और कृषि उत्पादन की खपत के लिए मौजूद है। यह भू–भाग फिलहाल उद्योग और व्यवसाय के संदर्भ में शेष भारत में होने वाले उत्पादनों पर आश्रित है। भारत सरकार से योजनात्मक विकास के रूप में जो सहायता पूर्वी क्षेत्र के राज्यों को प्राप्त होती है उसका बड़ा हिस्सा खपत उपयोग के मामले में पराश्रित होने के कारण यहाँ से बाहर चला जाता है। नतीजा है कि यह क्षेत्र आर्थिक पिछड़ापन और औपनिवेशिक व्यापार की दोहरी परिस्थिति का शिकार है। योजना आयोग की रुटिन बैठकों और सम्मेलनों से अलग राज्यों के लिए अलग सहायता एवं कार्यक्रमों के साथ ही समय की जरुरत है कि इस क्षेत्र के संदर्भ में एकीकृत विकास योजनाओं पर भी विचार किया जाए, ताकि इस क्षेत्र को विकास विडंबना की वर्तमान स्थिति से उबारा जा सके। भारत के पूर्वी क्षेत्र के राज्यों में गरीबी उन्मूलन और गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली जनसंख्या के जीवन स्तर में सुधार के लिए भी यह आवश्यक है। इसके लिए भारत के पूर्वी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को पूर्वी क्षेत्र के राज्यों का एक स्थायी आर्थिक संघ स्थापित करने की पहल करनी चाहिए।

सरयू राय
¼lj;w jk;½